मरयिम, यीशु की माता (2 का भाग 2): यीशु का जन्म

रेटिंग:

विवरण: [illegible]

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म मरयम

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं पैगंबरों की कहानियां

द्वारा: Aisha Stacey (© 2008 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

सभी मुसलमानों द्वारा सम्मानित और प्रिय और एक पवित्र और धर्मपरायण महिला के रूप में जानी जाने वाली यीशु की माँ मरयिम को अन्य सभी महिलाओं से ऊपर (श्रेष्ठ) चुना गया था। इस्लाम ईसाई धारणा को खारिज करता है कि यीशु एक ट्रिनिटी का हिस्सा है, जो कि ईश्वर है, और स्पष्ट रूप से इनकार करता है कि यीशु या उसकी मां मरयम पूजा के योग्य हैं। क़ुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि ईश्वर के अलावा कोई अन्य पूज्य नहीं है।

“वही ईश्वर तुम्हारा पालनहार है, उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का निर्माता है। अतः उसकी वंदना करो..." (क़ुरआन 6:102)

हालांकि, मुसलमानों को पैगंबर यीशु सहित सभी पैगंबरो पर विश्वास करने और उनसे प्यार करने की आवश्यकता है, जो इस्लामी पंथ में एक विशेष स्थान रखते हैं। उनकी मां, मरयिम, सम्मान का स्थान रखती हैं। एक युवा महिला के रूप में, मरयिम यरूशलेम में प्रार्थना सभा में गईं, उनका पूरा जीवन ईश्वर की पूजा और सेवा के लिए समर्पित था।

मरयिम यीशु की खबर सुनती है

जब वह एकांत में थी, एक आदमी मरयिम के सामने आया। ईश्वर ने कहा:

“फिर उनकी ओर से पर्दा कर लिया, तो हमने उसकी ओर अपनी रूह़ (आत्मा) को भेजा, तो उसने उसके लिए एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।” (क़ुरआन 19:17)

मरियम डर गई और भागने की कोशिश की। उसने ईश्वर से यह कहते हुए आग्रह किया:

"मैं शरण मांगती हूं अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे ईश्वर का कुछ भी भय हो। स्वर्गदूत ने कहाः मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।।" (क़ुरआन 19:18-19)

मरियम इन शब्दों से चकित और हैरान थी। वह विवाहित नहीं थी, बल्कि एक कुंवारी और पवित्र थी। उन्होंने अविश्वसनीय रूप से पूछा:

"'मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? स्वर्गदूत ने कहाः इसी प्रकार ईश्वर जो चाहता है, उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है, तो उसके लिए कहता है कि "हो जा", तो वह हो जाता है।" (क़ुरआन 3:47)

ईश्वर ने आदम को पृथ्वी की धूल से बनाया, बिना माता या पिता के, उसने आदम की पसली से हव्वा को बनाया; और यीशु को उसने बिना पिता के, सिर्फ एक पवित्र कुंवारी माँ मरियम से बनाया। ईश्वर किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने के लिए सिर्फ 'हो जा' कहता है, और उन्होंने स्वर्गदूत जिब्रईल के माध्यम से यीशु की आत्मा को मरियम में फूंक दिया।

"तो फूँक दी हमने उसमें अपनी ओर से रूह़ (आत्मा) तथा उसने सच माना अपने पालनहार की बातों को ..." (क़ुरआन 66:12)

हालांकि क़ुरआन और बाइबिल में मरियम की कहानियों में कई पहलू समान हैं, लेकिन इस्लाम इस विचार को पूरी तरह से खारिज करता है कि मरियम की मंगनी या शादी हुई थी। समय बीतता गया, और मरियम डर गई कि उसके आस-पास के लोग क्या कहेंगे। वह सोचती थी कि वे कैसे विश्वास करेंगे कि किसी पुरुष ने उसे छुआ नहीं है। इस्लाम के अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत हैं कि मरियम की गर्भावस्था की अवधि सामान्य थी। [2] फिर, जैसे उसके जन्म देने का समय आया, मरियम ने यरूशलेम को छोड़ने का निश्चय किया, और बेतलेहेम शहर की ओर चल पड़ी। भले ही मरियम ने ईश्वर के वचनों को याद किया होगा, क्योंकि उसका विश्वास मजबूत और अडिग था, यह युवती चिंतित और बेचैन थी। लेकिन स्वर्गदूत जिब्रईल ने उसे आश्वस्त किया:

"हे मरयम! ईश्वर तुझे अपने एक शब्द की शुभ सूचना दे रहा है, जिसका नाम मसीह ईसा पुत्र मरयम होगा। वह लोक-प्रलोक में प्रमुख तथा ईश्वर के समीपवर्तियों में से होगा।" (क़ुरआन 3:45)

यीशु का जन्म हुआ

प्रसव का दर्द उसे खजूर के पेड़ के तने के पास ले आया और वह वेदना से चिल्लाई:

"क्या ही अच्छा होता, मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसिरी हो जाती!" (क़ुरआन 19:23)

मरियम ने अपने बच्चे को वहीं खजूर के पेड़ के नीचे जन्म दिया। *?? ???? ?? ??? ?? ?? ??, ?? ???? ?? ?? ?? ?? ?? ??, ????? ??? ?? ???? ?? ???? ???? ?? ??? ????? ??? ??*।

"तो उसके नीचे से पुकारा कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे एक स्रोत बहा दिया है। और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को, तुझपर गिरायेगा वह ताज़ी पकी खजूरें। अतः, खा, पी तथा आँख ठण्डी कर..." (क़ुरआन 19:24-26)

ईश्वर ने मरियम को पानी प्रदान किया, जैसे कि वह जिस स्थान पर बैठी थी, उसके नीचे एक धारा अचानक दिखाई दी। उसने उसे भोजन भी प्रदान किया; उसे बस खजूर के पेड़ के तने को हिलाना था। मरियम डरी और सहमी हुई थी; वह कमजोर महसूस कर रही थी, उसने अभी-अभी बच्चे को जन्म दिया था, तो वह एक खजूर के पेड़ के विशाल तने को कैसे हिला सकती है? परन्तु ईश्वर ने मरियम को जीविका प्रदान करना जारी रखा।

अगली घटना वास्तव में एक और चमत्कार थी, और मनुष्य के रूप में हम इससे एक महान सबक सीखते हैं। मरियम को खजूर के पेड़ को हिलाने की जरूरत नहीं थी, जो कि असंभव होता; उसे केवल एक प्रयास करना था। जैसे ही उन्होंने ईश्वर की आज्ञा का पालन करने का प्रयास किया, ताजा पके खजूर पेड़ से गिर गए और ईश्वर ने मरियम से कहा: "...**खाओ, पियो और आनन्द उठाओ।" (क़ुरआन 19:26)**

मरियम को अब अपने नवजात बच्चे को लेकर अपने परिवार का सामना करने के लिए वापस जाना था। निःसंदेह वह डरी हुई थी, और ईश्वर यह अच्छी तरह जानता था। इस प्रकार ईश्वर ने उन्हें ना बोलने का निर्देश दिया। मरियम के लिए यह समझाना संभव नहीं होता कि वह अचानक एक नवजात बच्चे की मां कैसे बन गई। चूंकि वह अविवाहित थी, इसलिए उसके लोग उसकी बातों पर विश्वास नहीं करेंगे। ईश्वर ने कहा:

"फरि यद किसी पुरुष को देखे, तो कह दे: वास्तव में, मैंने मनौती मान रखी है, अत्यंत कृपाशील के लिए व्रत की। अतः, मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।" (क़ुरआन 19:26)

मरयिम बच्चे को लेकर अपने लोगो के पास आई, और वे तुरन्त उस पर दोष लगाने लगे; उन्होंने कहा, "तुमने क्या कयिा है? आप एक अच्छे परविार से हैं और आपके माता-पिता पवत्रि थे।"

जैसा कि ईश्वर ने उसे निर्देशति कयिा था, मरयम ने बात नहीं की, उसने केवल अपनी बाहों में बच्चे की ओर इशारा कयिा। तब मरयिम के पुत्र यीशु ने बात की। एक नवजात शशिु के रूप में, ईश्वर के पैगंबर यीशु ने अपना पहला चमत्कार कयिा। ईश्वर की अनुमति से उन्होंने कहा:

"मैं ईश्वर का भक्त हूँ। उसने मुझे पुस्तक (इन्जील) प्रदान की है तथा मुझे पैगंबर बनाया है। तथा मुझे शुभ बनाया है, जहाँ रहूं और मुझे आदेश दयिा है प्रार्थना तथा दान का, जब तक जीवति रहूं। तथा आपनी माँ का सेवक बनाया है और उसने मुझे क्रूर तथा अभागा नहीं बनाया है। तथा शान्ति है मुझपर, जसि दनि मैंने जन्म लयिा, जसि दनि मरूँगा और जसि दनि पुनः जीवति कयिा जाऊँगा!" (क़ुरआन 19:30-34)

मरयिम को क़ुरआन (5:75) में एक सदि्दका (सच्चा) के रूप में संदर्भति कयिा गया है, लेकनि अरबी शब्द सदि्दीका का अर्थ केवल सच बोलने से अधकि है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति ने बहुत उच्च स्तर की धार्मकिता प्राप्त कर ली है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति न केवल अपने साथ और अपने आसपास के लोगों के साथ, बल्कि ईश्वर के प्रति भी सच्चा है। मरयिम एक ऐसी स्त्री थी जसिने ईश्वर के साथ अपनी वाचा पूरी की, जसिकी वह पूरी अधीनता के साथ पूजा करती थी। वह पवत्रि, और धर्मपरायण थी; वह इमरान की बेटी मरयिम थी जो यीशु की माँ होने के लिए अन्य सभी महलिाओं से ऊपर चुनी गई।

फ़ुटनोट:

[1] यह टप्पिणयिों में समझाया गया है कि उसके परधिान में छेद था, हालांकि छिंद स्वयं "उसकी शुद्धता" की बात करता है (यानी खुद को ववािह योग्य पुरुषों के लिए उपलब्ध होने से बचाती है)। इस प्रकार ईश्वर ने जो फूंका था स्वर्गदूत जब्रिईल द्वारा उसकी रक्षा की।

[2] शेख अल शंकीती (अदवा अल-बायन, 4/264)

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/1399

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।